जब खुली हकीकत मारफत, तब मजहब हुए सब एक।
तब सबके दिल धोखा मिट्या, हुए रोसन पाए विवेक।। १३ ।।

जब हकीकत और मारफत के भेद खुल गए तो सब धर्म एक हो गए और सबके दिलों के संशय मिट गए तथा जागृत बुद्धि के ज्ञान से कुरान के गुझ भेद जाहिर हो गए।

एती बातें कुरान में, बिध बिध करी रोसन।
कई नाम धर दई बुजरकियां, सो बल महंमद और मोमिन।। १४ ।।

ऐसी कई बातें कुरान में तरह-तरह से लिखी हैं और कई नामों से इमाम मेंहदी और मोमिनों की सिफत का वर्णन है।

कहे महामत मुसाफ उमत की, सिफत न आवे जुबान।
तीनों अर्स अजीम के, ईसे किए बयान।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान में लिखी मोमिन (ब्रह्मसृष्टियों) की सिफत जबान से कही नहीं जाती। इमाम मेंहदी, मोमिन तथा तारतम वाणी तीनों परमधाम के हैं, ऐसा ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी श्री देवचन्द्रजी) ने बताया।

|| प्रकरण || १२१ || चौपाई || १७५० ||

ब्रह्मसृष्टि बीच धाम के, ए देखें खेल सुपन।
मोहे स्यामाजीएं यो कह्या, जो आए धाम से आपन।। १ ।।

ब्रह्मसृष्टियां परमधाम में बैठकर सपने का खेल देख रही हैं। श्री श्यामाजी ने आकर मुझसे कहा कि हम परमधाम से आए हैं।

थे हम दोऊ बंदे स्यामाजीय के, एक नसली और नजरी।
झगड़ दोऊ जुदे हुए, देने खबर पैगंमरी।। २ ।।

हम दोनों नसली (बिहारीजी) और नजरी (मेहेराज ठाकुर) श्री देवचन्द्रजी की सन्तान हैं। दोनों आपस में झगड़ कर जुदा हो गए। दुनियां को पारब्रह्म की वाणी का सन्देश देने का एक उद्देश्य था।

तब केतिक गिरो उधर भई, और केतिक मेरे साथ।
दई जाहेर मसनंद नसलिएं, दूजी बातून मेरे हाथ।। ३ ।।

कई सुन्दरसाथ नसली पुत्र बिहारीजी के साथ और कई मेरे साथ आ गए। जाहिरी गादी चाकला मन्दिर की बिहारीजी को मिली और दूसरी बातूनी गद्दी मुझे दी, अर्थात् रुई की गद्दी बिहारीजी को मिली और श्री राजजी श्री श्यामाजी की बैठक मेरे अन्दर हो गई।

उतरी किताबें हम पे, गिरो नसली न माने सोए।
तब आया पैगंमर हममें, अब कह्या महमद का होए।। ४ ।।

परमधाम की वाणी का अवतरण मेरे तन से हुआ जिस को बिहारीजी की जमात नहीं मानती। तब मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी (देवचन्द्रजी) मेरे अन्दर आकर बैठ गए। जैसा रसूल मुहम्मद ने कुरान में कहा था वैसा ही हुआ।

सो हकीकत सब कुरान में, कई ठौरों लिखी साख।
जो ग्वाही लिखी आप साहेबें, कहूं केती हजारों लाख।। ५ ।।

इस हकीकत को कुरान में कई जगह पर गवाहियां देकर लिखा है। यह सब गवाहियां पारब्रह्म श्री राजजी महाराज ने स्वयं कुरान में लिखवाई हैं।

Nijanand App

हम दोऊ बंदे रूहअल्लाह के, दोऊ गिरो जुदी भई।
तीसरी सृष्ट जो जाहेरी, सब मजकूर इनकी कही।।६।।

हम दोनों रूह अल्लाह (श्यामाजी) के अंग थे और दोनों की जमातें अलग हो गईं ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि मेरे साथ आ गईं और तीसरी जीवसृष्टि बिहारीजी के साथ हो गई यह सब कुरान में लिखा है।

ठौर ठौर दई बड़ाइयां, मिने सब हमारी बात।
केती कहूं मेहेरबानगी, मेरे धनी करी साख्यात।।७।।

मेरे धाम धनी ने जो साक्षात् कृपा की है उसका मैं कैसे वर्णन करूं? कुरान में अनेक ठिकाने पर हमारी बातें और बुजरकी लिखी है।

महामत कहें कोई दिल दे, ए देखेगा मजकूर।
तिन रूह पर इमाम का, बरसे वतनी नूर।।८।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यदि कोई दिल से विचार कर इस जिक्र को समझेगा, तो उस पर इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) की कृपा का नूर बरसेगा।

।। प्रकरण ।। १२२ ।। चौपाई ।। १७५८ ।।

चरचरी छंद

स्यामाजी स्याम के संग, जुवती अति जोर जंग।
करती पूरन रंग, परआतम परे।।१।।

किशोरी श्री श्यामाजी अपने श्री श्यामजी श्री राजजी के साथ में जबरदस्त आनन्द की लीला करती हैं। वह अपनी परआतम के परे मूल स्वरूप का पूर्ण सुख लेती हैं।

अंग अंग उछरंग, सखी सखी मन उमंग।
अलबेली अति अभंग, भामनी रस भरे।।२।।

सब सखियों के मन भी उमंग से भरे हैं तथा उनके अंग-अंग में मस्ती छाई है। प्रेम की दीवानी सखियों को अखण्ड प्रेम मिला।

छटके छेल कंठ मेल, हांस खेल रंग रेल।
बंध बेल ठमके ठेल, कामनी केलि करे।।३।।

सखियां अपने प्रीतम के गले में बांहें डालकर झूलती हैं, हंसी और विनोद में खेलती हैं। वह ठुमकती हुई एक-दूसरे को धकेलती हुई प्रीतम से बेल की तरह लिपट कर आनन्द करती हैं।

कंठ हार सजे सिनगार, नैन समार सोभे मुखार।
संग आधार करे विहार, महामती काज सरे।।४।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इनके सुन्दर गले में हार हैं। सिनगार सजे हैं और नैनों में अंजन लगा मुखारबिन्द शोभायमान है। वह सखियां अपने धनी के साथ विहार करती है और अपनी मनोकामनाएं पूरी करती हैं।

।। प्रकरण ।। १२३ ।। चौपाई ।। १७६२ ।।

Nijanand App